



Neutral Citation No. - 2026:AHC-LKO:313-DB

ए.एफ.आर.

11.11.2025 को आरक्षित

06.01.2026 को सुनाया गया

उच्च न्यायालय इलाहाबाद, लखनऊ

आपराधिक अपील संख्या – 866/1988

विश्व नाथ तिवारी और अन्य

.....अपीलकर्ता

बनाम

उत्तर प्रदेश राज्य

.....प्रतिवादी

अपीलकर्ताओं के अधिवक्ता

: शशिकला, अशोक कुमार वर्मा, मंजू गुप्ता,
प्रदीप कुमार त्रिपाठी, रिपु दमन शाही

प्रतिवादियों के अधिवक्ता

: सरकारी अधिवक्ता

न्यायालय संख्या – 28

माननीय न्यायमूर्ति राजीव गुप्ता

माननीय न्यायमूर्ति प्रमोद कुमार श्रीवास्तव

(माननीय न्यायमूर्ति प्रमोद कुमार श्रीवास्तव द्वारा)

- हमने अपीलकर्ता संख्या 3 मंगू लाल और अपीलकर्ता संख्या 5 मकबूल के विद्वान अधिवक्ता श्री आर.डी. शाही, अपीलकर्ता संख्या 2 भाई लाल की विद्वान अधिवक्ता सुश्री मंजू गुप्ता और राज्य के विद्वान ए.जी.ए. श्री एच.पी. भौर्य की दलीलें सुनीं।
- प्रारंभ में ही अपीलकर्ताओं के विद्वान अधिवक्ता ने हमारे संज्ञान में लाया कि अपीलकर्ता संख्या 1 विश्व नाथ तिवारी, 4 लल्लू और 6 जगत् का निधन हो चुका है। अतः उनके विरुद्ध अपील दिनांक 17.02.2022 के आदेश द्वारा समाप्त कर दी गई है। अतः यह अपील केवल तीन जीवित अपीलकर्ताओं: अपीलकर्ता संख्या 2 भाई लाल, 3 मंगू लाल और 5 मकबूल के संबंध में ही विचाराधीन है।
- यह अपील लखीमपुर खीरी के प्रथम अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश द्वारा दिनांक 17.12.1988 को सत्र परीक्षण संख्या 40/1988 (राज्य बनाम विश्व नाथ तिवारी और अन्य) में पारित निर्णय और आदेश के विरुद्ध दायर की गई है, जो आई.पी.सी. की धारा 396 के तहत, दिनांक 21.10.1986 के अपराध संख्या 123/1986 पुलिस स्टेशन ईशा नगर, जिला लखीमपुर खीरी से संबंधित है, जिसमें निचली अदालत ने अभियुक्त अपीलकर्ताओं को आई.पी.सी. की धारा 396 के तहत अपराध के लिए दोषी ठहराया और आजीवन कारावास की सजा सुनाई।

तथ्यात्मक पृष्ठभूमि

अस्वीकरण

"अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।"



4. मामले के संक्षिप्त तथ्य यह हैं कि अभियोजन पक्ष का मामला शिकायतकर्ता बृज मोहन (गवाह-1) द्वारा दर्ज कराई गई एफआईआर पर आधारित है। घटना 20.10.1986 की रात लगभग 8:30 बजे शिकायतकर्ता के घर में घटी, जो हसनपुर-कटौली गांव, ईशानगर पुलिस स्टेशन, जिला खीरी में स्थित है। परिवार भोजन कर रहा था, तभी अपीलकर्ताओं सहित सात आरोपियों का एक समूह, जो सभी उसी गांव के निवासी थे और शिकायतकर्ता को अच्छी तरह जानते थे, जबरन घर में घुस गये। घर में लालटेन और एक (छोटी केरोसिन की बत्ती) जल रही थी। आरोपियों के पास कथित तौर पर घातक हथियार थे, विशेष रूप से बांका (घुमावदार चाकू), लाठी (डंडा), डंडा (डंडा) और तमंचा (देसी पिस्तौल)। आरोप है कि आरोपी शेष तिवारी ने शिकायतकर्ता के पिता पुट्टू लाल पर गोली चलाई और श्रीमती मुन्नी (शिकायतकर्ता की माता) पर बांका से घातक प्रहार किया, जिनकी दुखद रूप से चोटों के कारण मृत्यु हो गई। शिकायतकर्ता बृज मोहन और उनके पुत्र राजेंद्र प्रसाद (गवाह-5) भी घायल हो गए। यह भी आरोप है कि बदमाशों ने चांदी की करधनी (कमरबंद), अन्य चांदी के आभूषण और नथनी सहित कीमती सामान लूट लिया। शिकायतकर्ता ने दावा किया कि उसने लालटेन, टॉर्च और चांदनी की रोशनी में सभी बदमाशों की स्पष्ट रूप से पहचान कर ली थी।

5. अगले ही दिन, 21.10.1986 को, शिकायतकर्ता बृज मोहन (गवाह-1) ने ईशा नगर पुलिस स्टेशन में घटना के संबंध में एक लिखित रिपोर्ट (तहरीर, प्रदर्श Ka-1) प्रस्तुत की। परिणामस्वरूप, 21.10.1986 को सुबह 8:15 बजे सात आरोपियों, जिनके नाम शेष तिवारी, विश्व नाथ तिवारी, मंगू लाल, भाई लाल, जस्सू, लल्लू और मकबूल हैं, के खिलाफ एफआईआर (प्रदर्श Ka-2) दर्ज की गई।

6. जांच के दौरान, जांच अधिकारी (आई.ओ.) ने पूछताछ रिपोर्ट (प्रदर्श Ka-4) तैयार की और मृतक श्रीमती मुन्नी के शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा। जांच अधिकारी ने घटनास्थल का दौरा किया, रक्त से सनी, साधारण मिट्टी एकत्र की और (मसा, प्रदर्श Ka-5) तैयार किया, तथा घटनास्थल का नक्शा (प्रदर्श Ka-6) तैयार किया। लालटेन (प्रदर्श Ka-7) और टॉर्च (प्रदर्श Ka-8) को अपने कब्जे में ले लिया गया। घायल राजेंद्र प्रसाद (पीडब्ल्यू-5), बृज मोहन (पीडब्ल्यू-1) और पुट्टू लाल की चिकित्सकीय जांच की गई।

7. घायल बृज मोहन के शरीर पर निम्नलिखित चोटें पाई गईं:

1. नाक की जड़ पर 8 सेमी x 1 सेमी x 6 सेमी का चीरा घाव।
2. बाएं मास्टॉयड क्षेत्र पर 3 सेमी x 1.5 सेमी का खरोंच का घाव।
3. बाएं अग्रबाहु के पार्श्व भाग के नीचे 8 सेमी x 2 सेमी का आघात, कोहनी के जोड़ से 10 सेमी नीचे।

8. उसी दिन, एक अन्य घायल, राजेंद्र (पीडब्ल्यू-5) की भी जांच की गई, और निम्नलिखित चोटें पाई गईं:

1. 9 सेमी x 2 सेमी का चीरा घाव, खोपड़ी के पीछे की हड्डी पर, दाहिने मास्टॉयड से 7 सेमी ऊपर।
2. 5 x 5 सेमी x 1 सेमी का चीरा घाव, दाहिनी खोपड़ी के पीछे की हड्डी पर 1 सेमी।
3. 6.5 सेमी x 1.5 सेमी का चीरा घाव, खोपड़ी के पीछे की हड्डी पर।

अस्वीकरण

"अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।"



4. दाहिनी खोपड़ी के मास्टॉयड के ऊपर 5 सेमी x 1.5 सेमी x 2 सेमी हड्डी तक गहरा चीरा लगा हुआ घाव।
5. दाहिनी खोपड़ी के पृष्ठीय भाग पर 5 सेमी x 2 सेमी हड्डी तक गहरा चीरा लगा हुआ घाव।
6. दाहिनी खोपड़ी के पिछले भाग पर 6.5 सेमी x 2 सेमी मांसपेशी तक गहरा चीरा लगा हुआ घाव।
7. दाहिनी कोहनी के पिछले भाग पर 13 सेमी x 6 सेमी हड्डी तक गहरा चीरा लगा हुआ घाव।
8. सभी चोटों को निगरानी में रखा गया और एक्स-रे कराने की सलाह दी गई। डॉक्टर की राय थी कि सभी चोटें धारदार हथियार से लगी थीं और इनकी अवधि आधा से एक दिन पुरानी थी।
9. शव परीक्षण रिपोर्ट के अनुसार, मृतक श्रीमती मुन्नी के शरीर पर निम्नलिखित चोटें पाई गईं:
 1. सिर के सामने की ओर, दाहिनी भौंह से 4 सेमी ऊपर, 9 सेमी x 2 सेमी हड्डी तक गहरा चीरा लगा हुआ घाव, जो दाहिने कान के ऊपरी सिरे की ओर तिरछा फैला हुआ था। दाहिनी माथे की हड्डी कटी हुई थी, और उसके नीचे की झिल्ली भी कटी हुई पाई गई।
 2. चीरा घाव: बाएं हाथ की तर्जनी उंगली के मध्य और दूरस्थ भाग पर, हाथ से होकर गुजरता हुआ 1.5 सेमी x 0.5 सेमी x हड्डी को काटने वाला 1.5 सेमी गहरा घाव, जिसके परिणामस्वरूप उंगली लटक गई।
 3. फटा हुआ घाव: ऊपरी बांह के पीछे दाहिनी ओर, कंधे के शीर्ष से 4 सेमी नीचे 3 सेमी x 1 सेमी x हड्डी तक गहरा और नीचे स्थित ह्यूमरस (बांह की हड्डी) टूटी हुई पाई गई।मृत्यु का कारण मृत्युपूर्व चोटों के परिणामस्वरूप रक्तस्राव और सदमे को माना गया।
10. पुट्टू लाल गिरि को भी निम्नलिखित चोटें लगीं:
 1. चीरा घाव: बाएं ओर, जबड़े के घेरे पर 7 सेमी x 1.8 सेमी x मांसपेशी तक गहरा, जमा हुआ रक्त मौजूद था।
 2. आग्नेयास्त्र का प्रवेश घाव: दाहिने हाथ के पृष्ठीय भाग पर 3.5 सेमी x 2 सेमी, कलाई से 1 सेमी नीचे।
 3. आग्नेयास्त्र का निकासी घाव: दाहिने हाथ की हथेली पर, पार्श्व में स्थित, 6 सेमी x 2.6 सेमी का गोली का घाव।
 4. चोट का निशान: बाईं ओर छाती के पिछले हिस्से पर, बाएं कंधे की हड्डी से 12 सेमी नीचे, 7 सेमी x 2 सेमी।
11. डॉक्टर ने राय दी कि सभी चोटें मृत्यु से पहले की हैं, लगभग आधे से एक दिन पुरानी। विशेष रूप से, चोट संख्या 1 तेज हथियार से, चोट संख्या 2 बंदूक से और चोट संख्या 3 कुंद वस्तु से लगी थी।

अस्वीकरण

"अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।"



12. जांच अधिकारी ने घटनास्थल का नक्शा तैयार किया, गवाहों के बयान दर्ज किए और जांच पूरी करने के बाद, संबंधित धाराओं के तहत सात आरोपियों के खिलाफ आरोप पत्र (प्रदर्श Ka-21) न्यायालय में प्रस्तुत किया गया।

13. आरोप पत्र प्रस्तुत किए जाने पर, लखीमपुर खीरी के माननीय मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट ने अपने दिनांक 21.01.1988 के आदेश द्वारा अपराध का संज्ञान लिया। मामले को सत्र न्यायालय द्वारा ही विचारणीय मानते हुए, इसे सत्र न्यायालय को सौंप दिया गया, जहां इसे सत्र परीक्षण संख्या 40/1988 के रूप में पंजीकृत किया गया और सुनवाई के लिए प्रथम अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश, खीरी की अदालत को सौंप दिया गया।

14. विद्वान ट्रायल कोर्ट ने आरोपी-अपीलकर्ताओं के खिलाफ आई.पी.सी. की धारा 396 के तहत आरोप तय किए। उक्त आरोप आरोपियों को पढ़कर सुनाया गया और समझाया गया, लेकिन उन्होंने अपने ऊपर लगे आरोपों से इनकार किया, खुद को निर्दोष बताया और मुकदमे की मांग की।

15. मुकदमे की शुरुआत में, आरोपियों के खिलाफ मामले को साबित करने के लिए, अभियोजन पक्ष ने निम्नलिखित गवाहों की जांच की:

पीडब्ल्यू-1 बृज मोहन (शिकायतकर्ता/घायल), पीडब्ल्यू-2 कृपा राम (पक्षद्रोही लोक गवाह), पीडब्ल्यू-3 बहोरी लाल (पक्षद्रोही लोक गवाह), पीडब्ल्यू-4 तुरी (पक्षद्रोही लोक गवाह), पीडब्ल्यू-5 राजेंद्र प्रसाद (घायल पुत्र), पीडब्ल्यू-6 श्रीमती श्यामा देवी (पीडब्ल्यू-1 की पत्नी)।

16. अभियोजन पक्ष ने निम्नलिखित दस्तावेजी साक्ष्य भी प्रस्तुत किए:

प्रदर्श Ka-1: लिखित रिपोर्ट (तहरीर), प्रदर्श Ka-2: एफआईआर (जनरल डायरी की प्रति), प्रदर्श Ka-3: जी.डी. कार्बन कॉपी, प्रदर्श Ka-4: जांच रिपोर्ट, प्रदर्श Ka-5: साधारण और रक्त-रंजित मिट्टी एकत्र करने का मेमो, प्रदर्श Ka-6: साइट प्लान, प्रदर्श Ka-7: लालटेन का मेमो, प्रदर्श Ka-8: मशाल का मेमो, प्रदर्श Ka-9: सी.एम.ओ. को पत्र, प्रदर्श Ka-10: चालान प्रपत्र, प्रदर्श Ka-11: फोटो तैश (पचायतनामा), प्रदर्श Ka-12: सील इकाई का नमूना, प्रदर्श Ka-13 से प्रदर्श Ka-20: संपत्ति की कुर्की का मेमो और अन्य रिपोर्टें, और प्रदर्श Ka-21: आरोप पत्र। राजेंद्र (गवाह-5) की चोट रिपोर्ट: प्रदर्श Ka-22, बृज मोहन (गवाह-1) की चोट रिपोर्ट: प्रदर्श Ka-23, पुट्टू लाल की चोट रिपोर्ट: प्रदर्श Ka-24, मृतक मुन्नी की पोस्टमार्टम रिपोर्ट: प्रदर्श Ka-25।

गवाह-1 बृज मोहन लाल का बयान

17. गवाह-1, बृज मोहन लाल, प्रथम सूचक और मृतक श्रीमती मुन्नी के पुत्र हैं, उनका बयान इस प्रकार है: उन्होंने बयान दिया कि आरोपी उनके गांव के निवासी हैं। वह बुद्ध सिंह को जानते हैं। उन्होंने आगे बताया कि उनकी पान की दुकान है और बुद्ध सिंह अक्सर उनकी दुकान पर आते थे। बुद्ध सिंह की लल्लू और शेष तिवारी से दुश्मनी थी। आरोपी लल्लू और शेष तिवारी ने आपत्ति जताई और उनसे कहा कि बुद्ध सिंह को आने न दिया जाए, इस पर उन्होंने बुद्ध सिंह को अपने यहां आने से रोक दिया, और उसके बाद बुद्ध सिंह उनकी दुकान पर नहीं आए।

18. उन्होंने आगे बताया कि 20 अक्टूबर, 1986 को आधी रात को डकैत उनके घर आए। उस समय वे दरवाजे के बरामदे (स्थानीय भाषा में बारमदा) में बैठे थे। एक छोटा सा दीपक (डिबरी) उस जगह को

अस्वीकरण

"अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।"



रोशन कर रहा था, और उनके माता-पिता घर के अंदर मौजूद थे। उन्होंने आगे बताया कि उनका बेटा राजेंद्र दरवाजे पर मौजूद था। घर के अंदर दो लालटेन जल रही थीं। उजाली रात थी, और चारों ओर चांदनी फैली हुई थी।

19. उन्होंने आगे बताया कि सात बदमाश डकैती करने के इरादे से उनके घर में घुसे थे, और वे उनके गांव के ही थे। उन्होंने सभी डकैतों को देखा था। आरोपी शेष तिवारी के पास एक कट्टा (देसी पिस्तौल) और एक बांका (एक प्रकार का घुमावदार हथियार) था, जबकि आरोपी विश्वनाथ के पास एक बंदूक और एक बांका था। अन्य आरोपियों के पास लाठी (डंडा), बांका और गुप्ती (तलवार जैसी छड़ी) थी।

20. उसने आगे बताया कि आरोपियों ने गोलीबारी शुरू कर दी। जब उसने घर में घुसने का विरोध किया, तो आरोपी विश्वनाथ ने उसके सिर पर बांके से वार किया, और उसके बाद आरोपी घर में घुस गए।

21. उसने आगे बताया कि आरोपी शेष तिवारी ने उसके पिता पर गोली चलाई। जब उसकी माँ उसे बचाने दौड़ी, तो शेष तिवारी ने उस पर भी बांके से हमला किया। इन चोटों के कारण उसकी माँ की मृत्यु हो गई। उसने आगे बताया कि आरोपी शेष तिवारी ने राजेंद्र पर भी बांके से वार किया।

22. शोर सुनकर पड़ोसी बहोरी लाल, कृपा राम और तुरी वहाँ पहुँचे। उसने आगे बयान दिया कि जब गवाहों ने उन्हें डांटा, तो आरोपी लूटे हुए सामान के साथ भाग गए। उसने बयान दिया कि उसने टॉर्च की रोशनी और चाँदनी में आरोपियों को देखा और पहचाना था।

23. उसने यह भी बताया कि कुछ बदमाशों के हाथ में टॉर्च थी, और जब वे एक कमरे से दूसरे कमरे में जा रहे थे, तो वे टॉर्च चमका रहे थे। उन्होंने यह भी बताया कि घायल पुट्टू लाल लकवाग्रस्त होने के कारण हिल-डुल नहीं सकता और गवाही देने में असमर्थ है।

24. गवाह-2 कृपा राम का बयान:

एक अन्य प्रत्यक्षदर्शी, कृपा राम (गवाह-2), ने बयान दिया कि कथित घटना के समय, लगभग रात 9-10 बजे, वह अपने घर में था। उसने शोर-शराबा और गोलीबारी की आवाज सुनी थी। उसने बताया कि उसने डकैतों को नहीं देखा। उसने आगे बताया कि जब डकैत भाग गए, तो वह पुट्टू के घर पहुंचा। उसने आगे बताया कि जब गांव के अधिकांश लोग आ चुके थे, तो वह भी वहां दौड़ा। उसने अभियोजन पक्ष के बयान का समर्थन नहीं किया और मुकर गया।

25. गवाह-3 बहोरी लाल का बयान:

एक अन्य गवाह, गवाह-3 बहोरी लाल, ने बयान दिया कि उसे नहीं पता कि वास्तव में पुट्टू के घर में डकैती किसने की थी। उसने स्पष्ट रूप से कहा कि आरोपी व्यक्ति—शेष तिवारी, विश्वनाथ, मंगू लाल, जट्टू, लल्लू और मकबूल—ने डकैती नहीं की। वह भी मुकर गया।

26. गवाह संख्या 4 तुरी का बयान:

एक अन्य गवाह, गवाह संख्या 4 तुरी ने भी बयान दिया कि वह नहीं जानता कि पुट्टू के घर में डकैती किसने की। उसने स्पष्ट रूप से कहा कि आरोपी व्यक्ति—शेष तिवारी, विश्वनाथ, मंगू लाल, जट्टू, लल्लू और मकबूल—ने डकैती नहीं की। वह भी मुकर गया।

अस्वीकरण

"अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।"



27. गवाह संख्या 5 राजेंद्र का बयान:

गवाह संख्या 5 राजेंद्र, जो शिकायतकर्ता बृज मोहन लाल का घायल पुत्र है, ने बयान दिया कि लगभग रात 8:30 से 9:00 बजे के बीच उसके घर में डकैती हुई। उस समय वह जागा हुआ था। उसके पिता, बृज लाल, दरवाजे के दक्षिण की ओर बैठे थे और दरवाजे के अंदर एक छोटा सा दीपक जल रहा था। उत्तर दिशा का दरवाजा खुला था। उसने आगे बयान दिया कि कुछ डाकू घर में घुस आए। उनमें शेष तिवारी, विश्वनाथ, भाई लाल, मंगू, मकबूल, जगतु और लल्लू शामिल थे, जो गाँव के थे और उनके पास रोशनी का कोई साधन नहीं था।

28. उन्होंने आगे बयान दिया कि आरोपी शेष तिवारी के पास एक बांका और एक कट्टा था, जबकि आरोपी विश्वनाथ के पास एक बांका, मंगू के पास एक लाठी और भाई लाल के पास एक गुप्ती थी। उन्होंने आगे बताया कि शेष तिवारी ने बांका से उन पर वार किए। इसके बाद, शेष तिवारी ने बृज मोहन पर वार किए और शेष तिवारी ने मृतक, जो उनकी दादी थीं, पर गोली चला दी। घायल होने के बाद उनकी मौके पर ही मृत्यु हो गई। उन्होंने यह भी बयान दिया कि डकैती दो से ढाई घंटे तक चली। उनके चिल्लाने पर गवाह कृपा राम, बहोरी लाल और तुरी वहां पहुंचे, जिनके पास मशालें थीं। उन्होंने आगे बताया कि घटना के समय चांदनी थी। उन्होंने आगे बताया कि उन्होंने मशाल, लालटेन, छोटे दीपक और चांदनी की रोशनी में आरोपियों को पहचाना।

29. गवाह संख्या 6 श्रीमती श्यामा देवी का बयान

शिकायतकर्ता बृज मोहन की पत्नी श्रीमती श्यामा देवी ने गवाही दी कि रात लगभग 8-9 बजे डाकूओं ने उनके घर में डकैती की। उस समय दरवाजे और घर के अंदर एक छोटा सा दीपक जल रहा था। रात उजाली थी। आरोपी शेष तिवारी, विश्वनाथ, मंगू, लल्लू, जट्टू, मकबूल और एक अन्य आरोपी उनके घर में घुस आए। शेष तिवारी के हाथों में एक बंदूक और एक बांका था, जबकि विश्वनाथ के पास बांका, मंगू के पास लाठी और अन्य आरोपियों के पास भी लाठी थी।

उन्होंने आगे गवाही दी कि घर में घुसते ही आरोपियों ने सामान लूटना शुरू कर दिया। शेष तिवारी ने मृतक मुन्नी देवी पर वार किए और उनकी मृत्यु हो गई।

30. उन्होंने आगे गवाही दी कि शेष तिवारी ने उनके ससुर पर भी गोली चलाई और राजेंद्र पर भी बांका से वार किया। उन्होंने यह भी बताया कि डाकूओं ने उनके घर में एक घंटे तक डकैती की। जब ग्रामीण वहां पहुंचे तो डाकू भाग गए। डकैत हथियारबंद थे। उन्होंने यह भी बताया कि आरोपियों ने ग्रामीणों को डराने के लिए दरवाजे पर गोलियां चलाईं।

31. गवाह संख्या 7, एस.आई. वेद प्रकाश चतुर्वेदी का बयान:

गवाह संख्या 7, एस.आई. वेद प्रकाश चतुर्वेदी, जिन्होंने जांच की, ने बयान दिया कि लिखित रिपोर्ट (तहरीर), प्रदर्श ka 1 के आधार पर, उनके साथ तैनात हेड मुहर्रिर कौशलेंद्र शर्मा द्वारा सत्यापित एफआईआर दर्ज की गई थी, और इसे हेड मुहर्रिर द्वारा जनरल डायरी (जीडी) में दर्ज किया गया था।

32. उन्होंने आगे बताया कि उन्होंने शिकायतकर्ता बृज मोहन का बयान दर्ज किया था। घटनास्थल पर पहुंचने के बाद, उन्होंने घायल राजेंद्र कुमार और पुट्टू लाल का बयान दर्ज किया और उसके बाद उन्हें एक आधिकारिक पत्र (मजरूबी चिट्ठी) के साथ चिकित्सा परीक्षण के लिए भेजा। उन्होंने आगे बयान दिया

अस्वीकरण

"अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।"



कि उन्होंने मृतक मुन्नी के शव का पोस्टमार्टम किया और उसके बाद शव को कांस्टेबल दया राम त्रिवेदी के माध्यम से पोस्टमार्टम के लिए भेजा।

33. उन्होंने आगे बताया कि उन्होंने घटनास्थल का दौरा किया और मौके से खून से सने और साधारण मिट्टी के नमूने एकत्र किए। उन्हें सील करवाने के बाद, उन्होंने ज़ब्ती मेमो (फर्द) तैयार किया। उन्होंने यह भी बयान दिया कि उन्होंने लालटेन और छोटे दीपक का भी निरीक्षण किया और उन्हें शिकायतकर्ता को सुरक्षित रखने के लिए सौंप दिया, और इस संबंध में एक मेमो तैयार किया गया। उन्होंने पूछताछ के समय तैयार किए गए पुलिस दस्तावेजों को भी प्रमाणित किया।

34. उन्होंने आगे बयान दिया कि जांच के दौरान, उन्होंने गवाहों बृज मोहन, कृपा राम, बहोरी लाल, तुरी, राजेंद्र, श्रीमती श्यामू और अन्य के बयान दर्ज किए। उन्होंने यह भी बताया कि आरोपियों के फरार होने के कारण, उन्होंने उनके खिलाफ जब्ती (कुर्की)/अटैचमेंट की प्रक्रिया को अंजाम दिया। उन्होंने आगे बयान दिया कि 24 जनवरी, 1986 के बाद, जांच एस.एच.ओ. वी.के. राय को सौंप दी गई, जिन्होंने केस डायरी में चोट रिपोर्ट और पोस्टमार्टम रिपोर्ट दर्ज की। 14 नवंबर, 1986 को जांच पूरी होने के बाद, उन्होंने अभियुक्तों के खिलाफ आरोपपत्र प्रदर्श ka 21 प्रस्तुत किया था।

35. अभियोजन पक्ष के साक्ष्य समाप्त होने पर, दंड प्रक्रिया संहिता, 1973 की धारा 313 के तहत अभियुक्तों के बयान दर्ज किए गए। सभी अभियुक्तों ने अभियोजन पक्ष के मामले का खंडन किया और कहा कि वे निर्दोष हैं और मौजूदा राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता के कारण उन्हें झूठा फंसाया गया है। अभियुक्त विश्वनाथ तिवारी ने यह भी बताया कि उनके दाहिने हाथ में लकवा का दौरा पड़ा है, इसलिए वे अपने दाहिने हाथ से न तो कुछ पकड़ सकते हैं और न ही कुछ खा सकते हैं।

36. बचाव पक्ष के साक्ष्य के चरण में, अभियुक्तों ने कोई मौखिक या दस्तावेजी साक्ष्य प्रस्तुत नहीं किया।

37. दोनों पक्षों के विद्वान अधिवक्ताओं को सुनने के बाद, निचली अदालत ने अभियोजन पक्ष द्वारा प्रस्तुत साक्ष्य, अभियुक्तों द्वारा दिए गए बयानों और रिकॉर्ड पर उपलब्ध सामग्री पर विचार करते हुए पाया कि अभियुक्त-अपीलकर्ता ने डकैती की थी। न्यायालय ने आगे पाया कि अभियोजन पक्ष आई.पी.सी. की धारा 396 के तहत आरोपी व्यक्तियों के खिलाफ लगाए गए आरोप को संदेह से परे साबित करने में सफल रहा है, इसलिए उन्हें आई.पी.सी. की धारा 396 के तहत अपराध के लिए दोषी ठहराया गया और परिणामस्वरूप उन्हें आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई।

38. उक्त निर्णय एवं आदेश से व्यथित होकर, इस आपराधिक अपील संख्या 866/1988 को छह अपीलकर्ताओं, अर्थात् विश्व नाथ तिवारी, भाई लाल, मंगू लाल, लल्लू, मकबूल और जगत् द्वारा दायर किया गया है। यद्यपि, अपील लंबित रहने के दौरान, तीन अपीलकर्ता अभियुक्त, अर्थात् विश्व नाथ तिवारी, लल्लू और जगत् का देहांत हो चुका है, और उनकी अपीलें दिनांक 17.02.2022 के आदेश द्वारा समाप्त कर दी गई हैं। अब, यह अपील केवल शेष तीन अभियुक्त अपीलकर्ताओं, अर्थात् भाई लाल, मंगू लाल और मकबूल के लिए ही शेष है। यह उल्लेखनीय है कि शेष तिवारी, जिसके पास कथित तौर पर एक कट्टा (देसी पिस्तौल) और एक बांका (घुमावदार चाकू) था, इस अपील में अपीलकर्ता नहीं है। अब अपील तीन आरोपियों (भाई लाल, मंगू लाल और मकबूल) के खिलाफ लंबित है, जिन पर लाठी से लैस होने का आरोप है।

अस्वीकरण

"अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।"



39. यह उल्लेख करना आवश्यक है कि अभियोजन पक्ष ने घायल व्यक्ति की चिकित्सा-कानूनी रिपोर्ट तैयार करने वाले डॉक्टर और मृतक मुन्नी लाल का पोस्टमार्टम करने वाले डॉक्टर से पूछताछ नहीं की। फिर भी, निचली अदालत ने अप्रमाणित चिकित्सा और पोस्टमार्टम रिपोर्ट पर भरोसा किया।

40. अपीलकर्ताओं का निवेदन

(i). अपीलकर्ताओं के अधिवक्ता ने कहा कि अभियोजन पक्ष की पूरी कहानी अस्वाभाविक, अत्यधिक अविश्वसनीय और मनगढ़ंत है, जिसका मुख्य कारण हाल ही में हुए प्रधान चुनाव से उपजे राजनीतिक द्वेष है, जिसने शिकायतकर्ता के परिवार को अपने विरोधियों को झूठा फंसाने का मजबूत कारण प्रदान किया। यह तर्क दिया गया कि घर में घुसने वाले बदमाशों, शेष तिवारी और विश्वनाथ का उद्देश्य लूटपाट नहीं बल्कि मारपीट प्रतीत होता है, जिससे यह संकेत मिलता है कि उनका इरादा प्रतिशोध लेना और पुरानी दुश्मनी का हिसाब चुकता करना था, और लूटपाट का आरोप मात्र आई.पी.सी. की धारा 396 के तहत गंभीर अपराध को आकर्षित करने के लिए गढ़ा गया था।

(ii) अपीलकर्ताओं के विद्वान अधिवक्ता ने आगे कहा कि अपीलकर्ता शांति अपराधी नहीं हैं, यह स्वीकार किया जाना चाहिए, जबकि परिचित पड़ोसियों द्वारा खुलेआम डकैती का आरोप लगाना पूरी तरह अस्वाभाविक और अविश्वसनीय है। सावधानी की यह कमी एक महत्वपूर्ण कारक है जो अभियोजन पक्ष के तथ्यों के विवरण में तर्कसंगत संदेह पैदा करती है।

(iii) अपीलकर्ताओं के विद्वान अधिवक्ता ने आगे कहा कि अभियोजन पक्ष का मामला अपनी सारी विश्वसनीयता खो देता है क्योंकि एफआईआर में नामित प्रमुख स्वतंत्र गवाह - पीडब्ल्यू-2 कृपा राम, पीडब्ल्यू-3 बहोरी लाल और पीडब्ल्यू-4 तुरी - सभी मुकर गए। उन्होंने स्पष्ट रूप से बयान दिया कि वे आरोपियों को नहीं पहचानते थे, क्योंकि वे डकुओं के भाग जाने के बाद ही घर पहुंचे थे। इसके अलावा, घायल अभियोजन पक्ष के गवाहों के प्रकाश के स्रोत के संबंध में दिए गए बयान विरोधाभासी हैं, क्योंकि गवाह संख्या 5 राजेंद्र ने जिरह में कहा था कि लालटेन बुझी हुई थी।

(iv). अपीलकर्ताओं के विद्वान अधिवक्ता ने आगे कहा कि लूटी गई किसी भी वस्तु की बरामदगी न होने और समग्र रूप से दोषपूर्ण जांच के कारण डकैती का आरोप गंभीर रूप से कमजोर हो जाता है। इसके अलावा, निचली अदालत ने चोट रिपोर्ट और पोस्टमार्टम रिपोर्ट को स्वीकार करके और उन पर भरोसा करके एक मौलिक त्रुटि की, जबकि उन्हें तैयार करने वाले डॉक्टर द्वारा उन्हें कानूनी रूप से सिद्ध नहीं किया गया था; खाली कारतूस भी बरामद नहीं हुए थे।

(v). अपीलकर्ताओं के विद्वान अधिवक्ता ने आगे कहा कि यदि बदमाशों का एकमात्र उद्देश्य डकैती करना और मुखबिरों को लूटना था, तो यह एक अस्पष्ट कारक बना हुआ है कि उन्होंने मृतक श्रीमती मुन्नी देवी को क्यों बख्श दिया, जिन्होंने चांदी और सोने के आभूषण पहने हुए थे। यह विरोधाभास अत्यधिक विकृत है, जो इंगित करता है कि प्राथमिक मकसद डकैती के बजाय प्रतिशोध (या हत्या) था, और आई.पी.सी. की धारा 396 के तहत डकैती को नियंत्रित करने वाले सिद्धांत लागू नहीं होने चाहिए थे।

(vi). उपरोक्त दलीलों के आधार पर, अपीलकर्ताओं के विद्वान अधिवक्ता ने प्रस्तुत किया कि निचली अदालत द्वारा पारित आक्षेपित निर्णय और आदेश कानून की दृष्टि से मान्य नहीं है और इस न्यायालय द्वारा रद्द किए जाने योग्य है।

अस्वीकरण

"अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।"



41. प्रतिवादी की दलील

(i). इसके विपरीत, विद्वान ए.जी.ए. ने अपीलकर्ताओं के अधिवक्ता द्वारा उठाई गई दलीलों का जोरदार खंडन करते हुए निचली अदालत के फैसले की सत्यता पर जोर दिया। उन्होंने स्थापित कानूनी स्थिति पर बल दिया कि घायल गवाहों (पीडब्ल्यू-1 बृज मोहन, पीडब्ल्यू-5 राजेंद्र और पीडब्ल्यू-6 श्रीमती श्यामा देवी) की गवाही कानून में उच्च स्थान रखती है, क्योंकि घटनास्थल पर उनकी उपस्थिति उनकी चोटों से सुनिश्चित होती है, जो उनकी उपस्थिति की अंतर्निहित गारंटी के रूप में कार्य करती है। उन्होंने तर्क दिया कि घायल गवाह के बयान पर तब तक भरोसा किया जाना चाहिए जब तक कि प्रमुख विरोधाभासों और विसंगतियों के आधार पर इसे अस्वीकार करने के मजबूत आधार न हों, जो उनके अनुसार इस मामले में अनुपस्थित हैं।

(ii). विद्वान ए.जी.ए. ने आगे कहा कि कृपा राम (पीडब्ल्यू-2), बहोरी लाल (पीडब्ल्यू-3) और तुरी (पीडब्ल्यू-4) जैसे स्वतंत्र सार्वजनिक गवाहों के समर्थन न करने से पूरे अभियोजन मामले को खत्म नहीं किया जाना चाहिए, क्योंकि उनका समर्थन न करना अक्सर गांव में आरोपी पक्ष द्वारा उत्पन्न भय, दबाव और आतंक के कारण होता है।

(iii). उन्होंने आगे कहा कि पहचान न छिपाने का तर्क पूर्णतः मान्य नहीं है। उन्होंने तर्क दिया कि यह घटना गहरी शत्रुता और ग्राम प्रतिद्वंद्विता से प्रेरित थी, जिसने इसे प्रतिशोध की एक हताश कार्रवाई में बदल दिया, और जब आरोपी अत्यधिक शत्रुतापूर्ण होते हैं, तो वे अपनी पहचान छिपाए बिना "दुस्साहसी" की तरह कार्य कर सकते हैं।

(iv). उन्होंने आगे कहा कि आरोपियों की पहचान तुरंत और स्पष्ट थी क्योंकि वे जाने-माने पड़ोसी थे और उपलब्ध प्रकाश में दिखाई दिए थे। लालटेन, दिब्री, मशालों और चांदनी से प्राप्त प्रकाश परिचित व्यक्तियों को पहचानने के लिए पर्याप्त था।

(v). विद्वान ए.जी.ए. ने आगे कहा कि एक बार जब पांच या अधिक व्यक्तियों द्वारा डकैती का तथ्य स्थापित हो जाता है, और उस डकैती के दौरान हत्या हो जाती है, तो आई.पी.सी. की धारा 396 के तहत सभी प्रतिभागी हत्या के लिए परोक्ष रूप से उत्तरदायी हैं।

(vi). उन्होंने आगे कहा कि बचाव पक्ष द्वारा आग की संख्या या बाहर खड़े लोगों के संबंध में बताई गई विसंगतियां सामूली और स्वाभाविक विचलन हैं जो मामले की जड़ तक नहीं जाती हैं या अभियोजन पक्ष की मूल कहानी से विचलित नहीं करती हैं, जिसका तीन घायल चश्मदीनों द्वारा लगातार समर्थन किया गया है।

(vii). उपरोक्त के आधार पर, विद्वान ए.जी.ए. ने कहा कि विद्वान ट्रायल कोर्ट ने अपीलकर्ताओं को कानून के अनुसार सही ढंग से दोषी ठहराया और सजा सुनाई है। आक्षेपित आदेश में कोई अवैधता या त्रुटि नहीं है जिसके लिए इस न्यायालय द्वारा किसी हस्तक्षेप की आवश्यकता हो।

42. तथ्यों और पक्षों के विद्वान अधिवक्ताओं द्वारा प्रस्तुत दलीलों के आधार पर, हम निम्नलिखित निर्धारण बिंदु तैयार करते हैं:

(A) क्या अभियोजन पक्ष ने अपने मामले को उचित संदेह से परे साबित कर दिया है?

अस्वीकरण

"अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।"



(B) क्या निचली अदालत ने अभियुक्त अपीलकर्ताओं को दोषी ठहराने में सही फैसला किया है?

43. बिंदु संख्या. (A) क्या अभियोजन पक्ष ने अपना मामला संदेह से परे साबित कर दिया है- इस बिंदु के आधार पर यह देखना होगा कि क्या अभियोजन पक्ष ने अपना मामला संदेह से परे साबित कर दिया है?

44. प्रारंभ में यह उल्लेख करना उचित है कि अभियोजन पक्ष के अनुसार, शोर सुनकर कई ग्रामीण वहाँ पहुँचे। उनमें से कृपा राम, बहोरी लाल और तुरी नामक ग्रामीणों को चश्मदीद गवाह बताया गया है, जो घटना स्थल पर पहुँचे।

45. अभियोजन पक्ष ने उनसे पूछताछ की, लेकिन उन्होंने अभियोजन पक्ष के मामले का समर्थन नहीं किया और मुकर गए। इसलिए, उनके साक्ष्य का लाभ/महत्व अभियोजन पक्ष को नहीं दिया जा सकता।

46. अब, तीन प्रत्यक्षदर्शी बचे हैं, और अभियोजन पक्ष उनके बयानों पर दृढ़ता से निर्भर करता है, क्योंकि उनमें से दो को पीड़ित गवाह बताया गया है। अभियोजन पक्ष का तर्क है कि घायल होने के कारण गवाह संख्या 1 बृज मोहन, गवाह संख्या 2 कृपा राम और गवाह संख्या 5 राजेंद्र प्रसाद के बयानों को खारिज नहीं किया जा सकता। कानून घायल गवाह के साक्ष्य को उच्च महत्व देता है, और अभियोजन पक्ष ने माननीय सर्वोच्च न्यायालय के अब्दुल सईद बनाम मध्य प्रदेश राज्य (2010) 10 SCC 259 मामले का हवाला देते हुए कहा है कि घायल गवाह की गवाही महत्वपूर्ण होती है। हालांकि, नियम यह कहता है कि यदि गंभीर विरोधाभास और विसंगतियों के ठोस आधार हों तो ऐसी गवाही को खारिज कर दिया जाना चाहिए। माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने इस बात पर जोर दिया है कि घायल गवाह की गवाही की विश्वसनीयता की भी गहन जांच की जानी चाहिए। उक्त निर्णय का प्रासंगिक अनुच्छेद 30 नीचे दिया गया है:

“30. इस विषय पर कानून को संक्षेप में इस प्रकार कहा जा सकता है कि घायल गवाह की गवाही को कानून में विशेष दर्जा प्राप्त है। इसका कारण यह है कि गवाह को लगी चोट अपराध स्थल पर उसकी उपस्थिति की अंतर्निहित गारंटी है और गवाह अपने वास्तविक हमलावर को केवल किसी तीसरे व्यक्ति को झूठे आरोप में फंसाने के लिए सजा से मुक्त नहीं होने देना चाहेगा। इसलिए, घायल गवाह के बयान पर भरोसा किया जाना चाहिए, जब तक कि उसमें मौजूद प्रमुख विरोधाभासों और विसंगतियों के आधार पर उसके साक्ष्य को अस्वीकार करने के ठोस कारण न हों।”

47. यहां यह स्पष्ट किया जाना चाहिए कि उद्धृत मामला डकैती के मामले से संबंधित नहीं है, हालांकि घायल गवाह के बयान के मूल्यांकन और सत्यता के संबंध में सिद्धांत निर्धारित किया गया है। इसे ध्यान में रखते हुए, हम कथित घटना में घायल हुए गवाहों द्वारा दिए गए बयानों का विश्लेषण करते हैं।

48. बृज मोहन (गवाह-1) के बयान के अनुसार, उन्होंने अपने मुख्य बयान में स्पष्ट रूप से कहा है कि आरोपी शेष तिवारी और एक अन्य आरोपी विश्वनाथ तिवारी कट्टा और बांका लिए हुए थे, लेकिन जीवित अपीलकर्ता/आरोपी के संबंध में, गवाह ने स्पष्ट रूप से यह नहीं बताया कि लाठी किसके पास थी, बांका किसके पास था और गुप्ती किसके पास थी। उनके बयान से यह भी स्पष्ट है कि मृतक श्रीमती मुन्नी देवी को शेष तिवारी द्वारा बांका से चोटें पहुंचाई गईं, और शेष तिवारी ने घायल राजेंद्र पर भी बांका से वार किए। इसके अलावा, शेष तिवारी ने शिकायतकर्ता के पिता पर भी गोली चलाई। शिकायतकर्ता ने कोई भी ऐसा शब्द नहीं कहा कि जीवित अपीलकर्ता/आरोपी ने घायल या मृतक पर बांका या किसी अन्य

अस्वीकरण

“अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।”



हथियार से वार किए। इस प्रकार, एफआईआर के मूल विवरण से विचलन है, जिसमें यह कहा गया है कि सभी आरोपियों ने लाठी, बांका और आग्नेयास्त्र से वार किए।

49. एक अन्य गवाह राजेंद्र (पीडब्ल्यू-5), जो शिकायतकर्ता का पुत्र है, जिसकी मुख्य गवाही ऊपर दी जा चुकी है, ने जिरह के दौरान कहा कि विश्वनाथ तिवारी और शेष तिवारी को छोड़कर, मंगू के पास लाठी और भाई लाल के पास गुप्ती थी। हालांकि, उसने यह नहीं कहा कि जीवित बचे आरोपियों, अर्थात् भाई लाल, मंगू लाल और मकबूल ने इनमें से किसी भी हथियार से घायल या मृतक पर वार किए थे।

50. पैराग्राफ 7 में अपनी जिरह के दौरान राजेंद्र (गवाह-5) ने कहा है कि उसने यह नहीं देखा कि मंगू के पास कौन सा हथियार था। उसने स्पष्ट रूप से कहा कि किसी भी उपद्रवी के पास लाठी नहीं थी। एक अन्य प्रत्यक्षदर्शी, श्रीमती श्यामा देवी (गवाह-6), जो शिकायतकर्ता बृज मोहन की पत्नी हैं और जिनका बयान ऊपर दिया गया है, ने भी अपनी गवाही को इस बात तक सीमित रखा कि मंगू और भाई लाल के पास लाठी थी। हालांकि, उन्होंने यह भी नहीं कहा कि जीवित आरोपी, अर्थात् भाई लाल, मंगू लाल और मकबूल, ने घायल और मृतक पर लाठी या किसी अन्य हथियार से वार करने में भाग लिया था।

51. अपनी जिरह में भी उन्होंने एक शब्द भी नहीं कहा कि जीवित आरोपी ने भी वार किए थे। इस प्रकार, एफआईआर में जीवित आरोपियों की भूमिका और इन प्रत्यक्षदर्शी गवाहों की गवाही में बताई गई भूमिका के संबंध में गंभीर विरोधाभास है।

52. अब, हम उनके कथनों में मौजूद अन्य प्रमुख विरोधाभासों पर विचार करेंगे, विशेष रूप से प्रकाश के स्रोत और घटना को अंजाम देने वाले बदमाशों की भूमिका के अभाव के संबंध में।

53. अभिलेखों के अवलोकन से पता चलता है कि अभियोजन पक्ष ने बृज मोहन (गवाह-1) और राजेंद्र (गवाह-5) को पीड़ित गवाह के रूप में पेश किया है। बृज मोहन (गवाह-1) ने बताया कि सभी आरोपी उनके गांव के निवासी हैं। उन्होंने यह भी बताया कि उनके गांव में पान की दुकान है, जहां बेतीगांव निवासी बुद्ध सिंह पान खाने आते थे। उन्होंने स्वीकार किया कि लल्लू, शेष तिवारी और बुद्ध सिंह के बीच दुश्मनी है। लल्लू और शेष तिवारी ने आपत्ति जताई और उन्हें बुद्ध सिंह को दुकान पर आने से रोकने के लिए कहा। उन्होंने आगे बताया कि 20.10.1986 को लगभग आधी रात को वे अपने उत्तर दिशा वाले बरामदे में बैठे थे और घर के अंदर एक डिबरी जल रही थी। उनके माता-पिता मौजूद थे और राजेंद्र दरवाजे पर खड़े थे। घर के अंदर एक लालटेन जल रही थी और घर के बाहर प्रकाश का कोई अन्य स्रोत नहीं था, लेकिन रात उजाले वाली थी। उसने आगे बताया कि उसी इलाके के सात आरोपी उसके घर डकैती करने आए थे। शेष तिवारी के पास लाठी और बांका था, विश्वनाथ के पास भी एक बंदूक और बांका था, और अन्य लोगों के पास लाठी, गुप्ती और बांका था। उसने बताया कि बंदूकों से दो गोलियां चलाई गईं और उसने उन्हें घर में घुसने से रोका। विश्वनाथ ने उसके पिता पर बांका से वार किया और शेष तिवारी ने गोली चलायी। जब उसकी मां उसे बचाने दौड़ी, तो शेष तिवारी ने बांका से उसकी मां पर वार किया और उनकी मृत्यु हो गई। शेष तिवारी ने राजेंद्र पर भी बांका से वार किया, जिससे वह घायल हो गया। इस प्रकार, इस गवाह के मुख्य बयान से यह स्पष्ट होता है कि बांका का वार जिससे मृत्यु हुई, वह आरोपी शेष तिवारी ने किया था, और उसने कट्टा (बंदूक) से भी चोटें पहुंचाईं, और आरोपी विश्वनाथ ने बांका से वार किया। अन्य आरोपियों के संबंध में, उन्होंने इस बारे में एक शब्द भी नहीं कहा कि चोटें किसने पहुंचाईं, लेकिन उन्होंने कहा है कि आरोपियों ने डकैती की और सामान लूटा।

अस्वीकरण

"अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।"



54. जिरह के दौरान इस गवाह ने बताया कि सुरक्षा के लिए उसके पास लाइसेंसी बंदूक है और कथित घटना के समय उसकी बंदूक लल्लन बिहारी के घर में रखी थी। उसने यह भी स्वीकार किया कि लल्लन बिहारी और शेष तिवारी के बीच दुश्मनी है। उसने आगे बताया कि ग्राम प्रधान का चुनाव हुआ था, जिसमें आरोपी व्यक्ति विजयी उम्मीदवार राधे श्याम के पक्ष में थे, जबकि लल्लन बिहारी पराजित उम्मीदवार गुरु प्रसाद के पक्ष में थे; इसके बाद लल्लन बिहारी और आरोपी व्यक्तियों (मुलजिमान) के बीच दुश्मनी हो गई। उसने यह भी स्वीकार किया कि घटना के ठीक अगले दिन लल्लन बिहारी उसके घर आया और उसने लल्लन बिहारी को आरोपियों के नाम बताए। तब लल्लन बिहारी ने उससे कहा कि एफआईआर में केवल उन्हीं के नाम दर्ज किए जाएं जिनके वह गवाह है। उसने यह भी बताया कि संपत्ति में उसके पिता का हिस्सा उसके हिस्से से अलग है। जिरह से पता चलता है कि वह आग्नेयास्त्र का लाइसेंसधारक है, और यद्यपि उसने स्वीकार किया कि वह पान की दुकान का मालिक है, उसने यह नहीं बताया कि उसने अपने लाइसेंसी हथियार को लेने का प्रयास क्यों नहीं किया, जो लल्लन बिहारी के घर में रखा था, जिसका घर उसके घर से लगभग 200 फीट की दूरी पर स्थित है। लेकिन उसने स्वीकार किया कि सभी आरोपियों ने अपनी पहचान छिपाने के लिए कोई मुखौटा नहीं पहना था और न ही अपना चेहरा ढका था, और उनके मुंह खुले हुए थे। उसने आगे कहा कि केवल दो आरोपी घर में दाखिल हुए थे, और बाकी घर के बाहर थे।

55. इस प्रकार, इस गवाह द्वारा मुख्य परीक्षा में दिए गए बयान के अनुसार, आरोपी विश्वनाथ और शेष तिवारी घर के अंदर दाखिल हुए, जिसका अर्थ है कि वर्तमान अपीलकर्ताओं (भाई लाल, मंगू लाल, मकबूल) ने घर के अंदर जाने का कोई प्रयास नहीं किया और न ही किसी घायल गवाह को कोई चोट पहुंचाई। यद्यपि यह डकैती का मामला है, लेकिन उनके सामान्य इरादे या सामान्य उद्देश्य की कोई आवश्यकता नहीं है क्योंकि उन्होंने संयुक्त रूप से अपराध किया है। इसलिए, यदि उनकी उपस्थिति सत्यापित हो जाती है, तो उन पर लगाए गए आरोप के लिए उनकी भूमिका पर्याप्त मानी जाएगी। उन्होंने यह भी कहा कि उन्होंने अपने बयान में यह स्पष्ट नहीं किया कि घर के बाहर कौन से विशेष अपीलकर्ता मौजूद थे। इस प्रकार, पीड़ित गवाह के बयान से पता चलता है कि शेष तिवारी और आरोपी विश्वनाथ उनके घर में आए और उन्होंने कट्टे, लाठी और बांका से उन पर वार किए। इस गवाह के बयान से यह स्पष्ट नहीं होता कि वहां आए बदमाशों ने पहले लूटपाट या घरेलू सामान या गहनों की चोरी करने का प्रयास किया था। इससे यह भी पता चलता है कि आरोपी शेष तिवारी और विश्वनाथ का इरादा मारपीट करना था, न कि लूटपाट करना। अन्यथा, घर में घुसने वाले बदमाश पहले कीमती सामान और पैसे की तलाश करते और उसे ध्यान में रखते हुए, प्रतिरोध होने पर हिंसा का प्रयोग करते। इससे यह भी पता चलता है कि इस गवाह की गवाही से यह भी स्पष्ट होता है कि घटनाएँ एफआईआर में बताए गए अनुसार नहीं घटीं।

56. अब हम एक अन्य प्रत्यक्षदर्शी के साक्ष्य पर आते हैं, जिसे घायल बताया गया है। शिकायतकर्ता बृज मोहन के पुत्र राजेंद्र प्रसाद को गवाह संख्या 5 के रूप में पेश किया गया है। उन्होंने अपने मुख्य बयान में कहा है कि घटना के समय वे बरामदे में बैठे थे, जबकि उनके पिता बृज मोहन दरवाजे पर बैठे थे। दरवाजे पर लालटेन की रोशनी थी और घर के अंदर डिबरी की रोशनी थी। उन्होंने बताया कि कुछ बदमाश उनके घर में घुस आए, जिनके नाम शेष तिवारी, विश्वनाथ, मंगू, मकबूल, जट्टू, लल्लू (सभी सात नाम) हैं और वे उनके गांव के निवासी हैं। उन्होंने बताया कि आरोपी शेष तिवारी ने उनके शरीर पर बांके से वार किए। इसके बाद विश्वनाथ ने बृज मोहन पर वार किए और शेष तिवारी ने मृतक दादी पर गोली चलाई और घायल पुट्टू लाल (दादाजी) को भी मारा। लेकिन आश्चर्यजनक बात यह है कि इस गवाह ने बताया है कि

अस्वीकरण

"अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।"



डकैती की घटना ढाई घंटे तक चली। जिरह के दौरान उसने बताया कि जब डाकू उसके घर में घुसे तो लालटेन नहीं जल रही थी; वह बुझा हुआ (बुझी हुई) थी। उसने आगे बताया कि डिबरी भी बुझी हुई थी, इसलिए वह यह पता नहीं लगा सका कि कौन सा डाकू घर के अंदर था और कौन सा बाहर, लेकिन निश्चित रूप से किसी भी डाकू ने अपना चेहरा नहीं ढका था। इस प्रकार उसके बयान से यह स्पष्ट होता है कि जिरह के दौरान उसने अपने पहले के बयान से हटकर बात कही है। एक बात और भी चौंकाने वाली है कि उसके बयान के अनुसार बदमाशों ने 10-12 गोलियां चलाईं और ग्रामीणों ने भी 10-12 गोलियां चलाईं, लेकिन जांच अधिकारी को कोई भी खाली कारतूस बरामद नहीं हुआ। शिकायतकर्ता के बयान के अनुसार केवल दो गोलियां चलाई गईं, जबकि इस गवाह ने कहा कि उन्होंने 10-12 गोलियां चलाईं। इस प्रकार, इस गवाह के बयान में बड़ा विरोधाभास है, जो शिकायतकर्ता गवाह के बयान से मेल नहीं खाता, जिसके घायल होने का भी आरोप है। इसलिए, गवाहों की गवाही पूरी तरह से विश्वसनीय गवाहों की श्रेणी में नहीं आती है।

57. एक अन्य प्रत्यक्षदर्शी, श्रीमती श्यामा देवी, यानी शिकायतकर्ता की पत्नी, का गवाह संख्या 6 के रूप में पेश किया गया है। उन्होंने बताया कि घटना के समय उनके ससुर और पुत्र राजेंद्र घर के अंदर बैठे थे, और उनके पति घर के बाहर थे। एक डिबरी जल रही थी, लेकिन रात उजाला थी। उन्होंने यह भी बताया कि बदमाश शेष तिवारी और (सभी सात नाम: विश्वनाथ, मंगू, भाई लाल, जस्सू, लल्लू, मकबूल) आए और उनके घर में घुस गए। जिरह में उन्होंने स्वीकार किया कि घर के अंदर मौजूद लोगों को पहचाना नहीं जा सका, और उन्होंने यह भी कहा कि अदालत के सामने मौजूद आरोपी घर में नहीं घुसे थे। उन्होंने यह भी स्वीकार किया कि आरोपियों ने अपने चेहरे नहीं ढके थे। उन्होंने आगे बताया कि घर के बाहर 7-8 से अधिक बदमाश थे, और घर के अंदर 7-8 अन्य लोग थे जो लूटपाट कर रहे थे। डकैतों की कुल संख्या 15-16 थी। इस प्रकार, वह नए तथ्य स्थापित करती है जिनकी पुष्टि घायल गवाहों की गवाही से नहीं होती। अतः इन गवाहों की गवाही को पूरी तरह विश्वसनीय नहीं कहा जा सकता, क्योंकि अन्य गवाहों की तुलना में उनके साक्ष्य में एक विरोधाभास है जिसे मामूली नहीं कहा जा सकता।

58. यह कानून का एक स्थापित सिद्धांत है कि जहां ऐसे गवाह का साक्ष्य आंशिक रूप से विश्वसनीय हो, तो उस स्थिति में कुछ सहायक साक्ष्य, जो प्रत्यक्षदर्शी या दस्तावेजी हो सकते हैं, प्रस्तुत किए जाने चाहिए। जैसा कि हमने पहले चर्चा की है कि अन्य शेष प्रत्यक्षदर्शी, जो पड़ोसी हैं और जिन्होंने घटना को देखने का दावा किया है, मुकर गए हैं, इस प्रकार इन घायल गवाहों के साक्ष्य की पुष्टि नहीं हुई है या अन्य स्वतंत्र गवाहों द्वारा पुष्टि नहीं की गई है।

59. यहां एक बात अधिक महत्वपूर्ण है कि रिकॉर्ड में उपलब्ध घायल व्यक्तियों की चोट रिपोर्ट, जिसमें बृज मोहन, राजेंद्र प्रसाद और पुट्टू लाल के शरीर पर चोटें दिखाई गई हैं। लेकिन इन दस्तावेजों को कानूनी तरीके से साबित नहीं किया गया, इस तथ्य के बावजूद कि निचली अदालत ने उन्हें साक्ष्य के रूप में स्वीकार किया और उन पर भरोसा किया। इसके अलावा, निचली अदालत के रिकॉर्ड में पोस्टमार्टम रिपोर्ट मौजूद है, लेकिन डॉक्टर द्वारा इसे भी साबित नहीं किया गया है, हालांकि निचली अदालत ने इस पर भरोसा किया है।

60. जो दस्तावेज विधिवत साबित नहीं हुए हैं, उन्हें न्यायालय दस्तावेजी साक्ष्य के रूप में नहीं मान सकता। इस प्रकार, घायलों द्वारा अपने ऊपर लगी चोटों के संबंध में दिया गया बयान चिकित्सा साक्ष्य द्वारा समर्थित नहीं है।

अस्वीकरण

"अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।"



(ख) क्या निचली अदालत ने आरोपी अपीलकर्ताओं को दोषी ठहराने में सही किया है?

61. अब हम आरोपी व्यक्तियों की पहचान और इस संबंध में उनके द्वारा उद्धृत कानून के संबंध में दोनों पक्षों द्वारा दिए गए तर्कों पर विचार करेंगे। जैसा कि स्पष्ट है कि गवाह संख्या 1, गवाह संख्या 5 और गवाह संख्या 6 ने सर्वसम्मति से अपनी गवाही में कहा कि आरोपी व्यक्तियों ने अपनी पहचान छिपाने के लिए अपना चेहरा नहीं ढका था।

62. माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने विभिन्न मामलों में डकैती और हत्या के मामलों में गवाहों के साक्ष्य का आकलन करने के लिए अलग-अलग सिद्धांत निर्धारित किए हैं। डकैती का मूल उद्देश्य मृत्यु या गंभीर चोट के भय से बलपूर्वक मूल्यवान संपत्ति को छीनना होता है। इस दौरान, आरोपी किसी को भी नहीं बखशाता, यहां तक कि प्रतिरोध करने या बाधा उत्पन्न करने पर मृत्यु का भी खतरा रहता है। डकैती का सिद्धांत यह है कि कोई भी व्यक्ति किसी परिचित व्यक्ति के घर में अपनी पहचान छुपाए बिना डकैती नहीं करता। सामान्य तौर पर, परिचित व्यक्तियों से यह अपेक्षा नहीं की जाती कि वे अपनी पहचान छुपाए बिना डकैती करें। यदि किसी प्रकार किसी डकैत की पहचान डकैती वाले घर के सदस्यों या गवाहों के सामने उजागर हो जाती है, तो उस पर मुकदमा चलाया जा सकता है। हालांकि, हत्या के मामले में, सर्वोपरि उद्देश्य शत्रुता के कारण बदला लेना होता है। ऐसे मामले भी हो सकते हैं जहां हत्या की जाती है और हमलावर दल का कोई सदस्य लापरवाही से संपत्ति भी ले जाता है। ऐसे मामले में, अपराध की प्रकृति नहीं बदलनी चाहिए, और यह हत्या का मामला रहेगा न कि डकैती का, इसलिए डकैती के सिद्धांत लागू नहीं होंगे। कभी-कभी साक्ष्य के कुछ हिस्सों को इस तरह बढ़ा जाता है कि यह डकैती का मामला लगे न कि हत्या का, और मृतक और घायल व्यक्तियों को डकैती के दौरान चोटें आई हों।

63. इसके अलावा, माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने रामजी लाल और अन्य बनाम उत्तर प्रदेश राज्य के मामले में इस बात पर जोर दिया है कि स्थानीय आरोपियों द्वारा अपनी पहचान छिपाने में विफलता डकैती के आरोप में एक गंभीर खामी है। उक्त मामले का प्रासंगिक अनुच्छेद-7 नीचे दिया गया है:

"7. रामजीलाल और जगदीश के संबंध में इस मामले की सबसे उल्लेखनीय विशेषता यह है कि वे घटना स्थल से कुछ फर्लांग (दो फर्लांग) की दूरी पर रहते हैं और गवाह उन्हें पहले से ही अच्छी तरह से जानते हैं... और इसके बावजूद साक्ष्य में ऐसा कोई संकेत नहीं है जिससे यह पता चले कि उन्होंने किसी भी तरह से अपनी पहचान छिपाने का प्रयास किया हो। यह सच है कि प्रत्येक मामले के तथ्यों और परिस्थितियों पर विचार करना होगा और यह सामान्य कानून नहीं बनाया जा सकता कि जब तक ज्ञात व्यक्ति अपनी पहचान छिपाने का प्रयास नहीं करते, उनसे अपने ही गांव या पड़ोसी गांव में डकैती में भाग लेने की उम्मीद नहीं की जा सकती। आम तौर पर जब कोई डकैती होती है... तो पड़ोस के जो लोग इसमें भाग लेते हैं, वे अपनी पहचान छिपाने के लिए हर संभव सावधानी बरतते हैं ताकि बाद में उनकी पहचान न हो सके और उन्हें मामले में फंसाया न जा सके... जब कोई ज्ञात व्यक्ति हताश और अत्यधिक शत्रुतापूर्ण होता है, तो वह अपना चेहरा ढकने जैसी सामान्य सावधानी बरते बिना डकैती करने जा सकता है। ऐसा सुप्रीम कोर्ट द्वारा सियाराम बनाम बिहार राज्य के मामले में माना गया था...."

64. माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने उत्तर प्रदेश राज्य बनाम गोकरण और अन्य के मामले में यह माना है कि आपराधिक कृत्यों में पहचान न छिपाने संबंधी अपवाद की प्रयोज्यता "वास्तव में घटना के समय प्रतिभागियों की मानसिक स्थिति पर निर्भर करती है।" यह निर्णय इस बात की पुष्टि करता है कि

अस्वीकरण

"अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।"



परिचित पड़ोसियों द्वारा बिना चेहरा छिपाए अपराध करने का तर्क तभी स्वीकार किया जा सकता है जब अभियोजन पक्ष के साक्ष्यों से आपराधिक दुस्साहस और हताशा की ऐसी असाधारण डिग्री स्पष्ट रूप से स्थापित हो।

65. हम पाते हैं कि यह सिद्धांत इस अपील के तथ्यों पर लागू नहीं होता है, क्योंकि अभियोजन पक्ष यह स्थापित करने में विफल रहा है कि वर्तमान अपीलकर्ता इतने हताश स्वभाव के व्यक्ति थे, जिससे उनकी पहचान न छिपाना एक ऐसा महत्वपूर्ण पहलू बना रहता है जो पहचान की सत्यता पर संदेह पैदा करता है।

66. स्पष्ट पहचान का दावा गवाह संख्या 5 राजेंद्र के बयान में पाए गए विरोधाभास से और भी कमजोर हो जाता है, जिसने गवाही दी कि लालटेन बुझ गई थी।

67. उपरोक्त निर्धारण बिंदुओं को ध्यान में रखते हुए, हम यह भी पाते हैं कि आई.पी.सी. की धारा 396 के तहत डकैती और हत्या का मूल आरोप अत्यंत संदिग्ध और निराधार है। यह निर्विवाद तथ्य है कि पक्षकार तीव्र राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता (पार्टीबंदी) में शामिल थे, जिससे अपीलकर्ताओं की पहचान - जो पड़ोसी थे और जिन्होंने अपना चेहरा नहीं छिपाया था - अत्यंत संदिग्ध हो जाती है, जिससे संकेत मिलता है कि प्राथमिक उद्देश्य लूटपाट के बजाय प्रतिशोध (मरपीट) था। यह संदेह इस अत्यंत असंभव परिस्थिति से और भी पुष्ट होता है कि यदि बदमाशों का इरादा वास्तव में डकैती का होता, तो वे मृतक के गहने (जिसमें एक चांदी की 'करधनी' भी शामिल है) जो कथित तौर पर पहने हुए थी, को छोड़ देते। अभियोजन पक्ष के मामले को और कमजोर करने वाला एक स्पष्ट और घातक कारक यह है कि डकैती के स्पष्ट आरोप के बावजूद जांच अधिकारी आरोपियों से कोई भी लूटी हुई वस्तु या यहां तक कि घटनास्थल से खाली कारतूस भी बरामद करने में पूरी तरह विफल रहा। यह कानूनी सिद्धांत सर्वविदित है कि जब डकैती का प्राथमिक उद्देश्य अत्यधिक संदेह से घिरा हो, विशेष रूप से जब पूर्व-मौजूदा दुश्मनी के कारण पहचान पर सवाल उठाया जाता हो, तो आई.पी.सी. की धारा 396 के तहत गंभीर आरोप अनिवार्य रूप से विफल हो जाएगा, जिसके परिणामस्वरूप अपीलकर्ताओं को संदेह का लाभ प्राप्त करने का अधिकार होगा।

68. पूरी जांच त्रुटिपूर्ण प्रतीत होती है, जिसके लिए न्यायिक हस्तक्षेप आवश्यक है। चूंकि डकैती का मूल अपराध सिद्ध नहीं हुआ है और गहरी राजनीतिक शत्रुता को देखते हुए अपीलकर्ताओं की पहचान अत्यधिक संदिग्ध है, इसलिए अपीलकर्ताओं को कानूनी रूप से संदेह का लाभ प्राप्त करने का अधिकार है। इसके अलावा, चूंकि डकैती का प्राथमिक तत्व निर्णायक रूप से स्थापित नहीं हुआ है, इसलिए आई.पी.सी. की धारा 396 के तहत परोक्ष दायित्व और काल्पनिक प्रावधान के तहत सभी सह-आरोपियों को हत्या के लिए दंडित करने का प्रश्न ही नहीं उठता। परिणामस्वरूप, निचली अदालत के निष्कर्ष साक्ष्यों के गलत मूल्यांकन पर आधारित होने के कारण विकृत माने जाते हैं।

69. रिकॉर्ड पर उपलब्ध सामग्री और तथ्यों पर समग्र रूप से विचार करने पर यह पता चलता है कि अभियोजन पक्ष के संस्करण की उत्पत्ति और स्रोत को दबा दिया गया है और सही संस्करण को एफआईआर में शामिल होने से रोका गया है। इस संबंध में, यह स्थापित कानून है कि जब अभियोजन पक्ष ने घटनाओं का सही संस्करण प्रस्तुत नहीं किया है, तो न्यायालय अविश्वसनीय अभियोजन कहानी के समर्थन में अभियोजन पक्ष के लिए नया मामला नहीं बना सकता है। माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने टिप्पणी की कि यदि अभियोजन पक्ष द्वारा घटना की उत्पत्ति और मूल को छुपाया जाता है, तो आरोपी व्यक्ति संदेह का लाभ पाने का हकदार होगा।

अस्वीकरण

"अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।"



70. यह उल्लेखनीय है कि बाके से चोट पहुँचाने का मुख्य आरोप मृतक आरोपी के विरुद्ध है और बाके से गोली चलाने और वार करने का आरोप शेष तिवारी के विरुद्ध है, जिसका अपील लंबित रहने के दौरान निधन हो गया है। जीवित अपीलकर्ताओं की भूमिका के संबंध में, अभियोजन पक्ष द्वारा प्रस्तुत साक्ष्य न तो विश्वसनीय है, न ही निर्णायक है, न ही ठोस है, और न ही यह विश्वास जगाता है।

71. उपरोक्त के मद्देनजर और विचाराधीन कानून के आलोक में मामले पर विचार करते हुए, यह न्यायालय पाता है कि साक्ष्यों के संचयी प्रभाव से यह निर्विवाद निष्कर्ष निकलता है कि अभियोजन पक्ष अपीलकर्ताओं के अपराध को सभी उचित संदेह से परे साबित करने में विफल रहा है। अभियुक्तों के विरुद्ध दोषसिद्धि कानून की दृष्टि से टिकाऊ नहीं है, क्योंकि स्वीकृत राजनीतिक शत्रुता, स्वतंत्र गवाहों की पूर्ण शत्रुता और ज्ञात पड़ोसियों द्वारा खुलेआम डकैती की अंतर्निहित असंभावना के कारण ऐसा संभव नहीं है। विद्वान निचली अदालत ने इन महत्वपूर्ण कमियों को नजरअंदाज करके घोर गलती की है। यह परिकल्पना कि अपराध अज्ञात बदमाशों द्वारा किया गया था और चल रही राजनीतिक 'पार्टीबंदी' के कारण अपीलकर्ताओं को झूठा फंसाया गया था, एक अत्यधिक संभावित और तर्कसंगत परिकल्पना है जिसे अभियोजन पक्ष संभावना के दायरे से बाहर करने में पूरी तरह विफल रहा है। पूरी जांच भी दोषपूर्ण प्रतीत होती है। चूंकि पहचान अत्यधिक संदिग्ध है और डकैती का मूल अपराध स्वयं सिद्ध नहीं हुआ है, इसलिए अपीलकर्ता कानूनी रूप से संदेह का लाभ पाने के हकदार हैं।

72. अतः, मामले के सभी तथ्यों, साक्ष्यों और परिस्थितियों पर विचार करते हुए, हमारा यह मत है कि प्रथम अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश, लखीमपुर खीरी द्वारा सत्र परीक्षण संख्या 40/1988 में दिनांक 17.12.1988 को पारित किया गया वह निर्णय और आदेश, जिसमें अपीलकर्ताओं को आई.पी.सी. की धारा 396 के तहत दोषी ठहराया गया था और आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई थी, निरस्त किया जाना चाहिए।

73. तदनुसार, अपील स्वीकार की जाती है। फलस्वरूप, दोषसिद्धि और सजा का निर्णय और आदेश निरस्त किया जाता है। अपीलकर्ताओं को उनके विरुद्ध लगाए गए आरोपों से बरी किया जाता है। अपीलकर्ता, अर्थात् मंगू लाल, मकबूल और भाई लाल, जमानत पर हैं। उन्हें आत्मसमर्पण करने की आवश्यकता नहीं है। उनके जमानत बांड रद्द कर दिए गए हैं और जमानतदारों को मुक्त कर दिया गया है।

74. इस निर्णय की एक प्रति, निचली अदालत के अभिलेख के साथ, तत्काल अनुपालन और आवश्यक कार्रवाई के लिए संबंधित न्यायालय को भेजी जाए।

(न्यायमूर्ति प्रमोद कुमार श्रीवास्तव) (न्यायमूर्ति राजीव गुप्ता)

06 जनवरी, 2026

हसीन यू.

अस्वीकरण

"अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।"



Translated version. Not for Legal Use.

अस्वीकरण

"अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।"